चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19-10-22	4	1-4

• एप्लीकेशन से एक क्लिक पर मिलेगी नवजात शिशुओं की देखभाल और उनके पोषण संबंधित जानकारी

एचएयू के वैज्ञानिकों को शिशुओं के पालन-पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) की तरफ से कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

एचएयू के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की तरफ रुख करते हैं। मगर बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश एप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया है

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा व अन्य।

जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए एचएयू की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व आविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय में ऐसी कई तकनीकों पर काम किया जा रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

यहां मिलेगी शैक्षिक सामग्री

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल एप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.10.22	4	3-4

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा समानता बिश्नोई व अन्य।

शिशुओं के पालन पोषण के लिए...

हकृवि को विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

हिसार, 18 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विनोद कुमार उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि इससे पूर्व हकृवि की छात्रा पूनम यादव को भी गर्भवती महिलाओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर कॉपीराइट प्रदान किया जा चुका है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	19-10-22	10	2-5

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के नाम एक और उपलब्धि

शिशुओं के पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

हिंसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा समानता बिश्नोई व अन्य।

शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार तथा डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.10.22	4	4-5

एचएयू : शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

सर्टिफिकेट दिखाते एचएयू के कुलपति प्रो.बीआर कांबोज। संवाद

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है।

नवजात शिशुओं की देखभाल, पोषण कपड़े, स्वास्थ्य से संबंधित सामग्री मोबाइल एप के माध्यम से दी जाएगी

भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल एप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण			

विज्ञानियों को शिशुओं के पालन पोषण के लिए मिला कापीराइट

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार आफ कापीराइट (इंडिया) द्वारा कापीराइट प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल एप की ओर रुख करते हैं। मगर बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश एप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। डा. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.10.22	6	3-5

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा शिशुओं के पालन पोषण हेतु विकसित शैक्षणिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा समानता विश्नोई व अन्य।

हिसार, 18 अक्तूबर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता विश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय में ऐसी कई तकनीकों पर काम किया जा रहा है जिन्हे बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	19-10-22	3	3-4

शिशुओं के पालन पोषण की शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

हिसार, 18 अक्तूबर (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है, क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं, परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	19.10.22	----	----

हकृवि वैज्ञानिकों ने शिशुओं के पालन पोषण के लिए विकसित की शैक्षिक सामग्री, मिला कॉपीराइट

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में है और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती है। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अधिकारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय में ऐसी कई तकनीकों पर काम किया जा रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी।

इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	18.10.22	----	----

तेजी से खत्म होते जा रहे हैं संयुक्त परिवार : प्रो. काम्बोज

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा शिशुओं के पालन पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रूख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्त्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय में ऐसी कई तकनीकों पर काम किया जा रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध : मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है।

इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	18.10.22	----	----

हिसार: शिशुओं के पालन पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

18 Oct 2022 19:04:46

हिसार, 18 अक्टूबर (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) की ओर से कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने मंगलवार को बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी।मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.10.22	----	----

शिशुओं के पालन पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कॉपीराइट प्राप्त करने वाली छात्रा समानता बिश्नोई व अन्य

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है।

कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	18.10.22	----	----

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा शिशुओं के पालन पोषण के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर मिला कॉपीराइट

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में शिशुओं की माताओं के लिए विकसित शैक्षिक सामग्री पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इण्डिया) द्वारा कॉपीराइट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आज के समय में इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री की बहुत आवश्यकता है क्योंकि संयुक्त परिवार तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत से युवा अभिभावकों को अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करनी पड़ती है। ऐसे में वे मदद के लिए इंटरनेट और मोबाइल ऐप की ओर रुख करते हैं। परन्तु बच्चों की परवरिश से संबंधित अधिकांश ऐप अंग्रेजी भाषा में हैं और इन्हें पश्चिमी देशों के माता-पिता की जरूरतों के हिसाब से बनाया गया है जबकि भारतीय बच्चों का विकास, उनका वातावरण और उनकी जरूरतें विदेशी बच्चों से भिन्न होती हैं। उन्होंने कहा माता-पिता में शिशु की देखभाल संबंधी ज्ञान की कमी शिशु की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के उपरोक्त विभाग की छात्रा समानता बिश्नोई ने डॉ. पूनम मलिक के मार्गदर्शन में बच्चों की देखभाल के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह शैक्षिक सामग्री तैयार की है। उन्होंने कहा यह सामग्री भारतीय माता-पिता के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका होगी। कुलपति ने इस शैक्षिक सामग्री के लिए इन शोधकर्ताओं की प्रशंसा की और इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय अनुसंधान व अविष्कारों की सहायता से किसानों व आमजन के लाभ के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय में ऐसी कई तकनीकों पर काम किया जा रहा है जिन्हें बौद्धिक संपदा के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

शैक्षिक सामग्री मोबाइल ऐप पर होगी उपलब्ध

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजु महता ने बताया कि उक्त शैक्षिक सामग्री में शारीरिक, गत्यात्मक, मानसिक, भाषा, सामाजिक और भावनात्मक विकास के बारे में जानकारी शामिल है। इसके साथ नवजात शिशुओं की देखभाल, उनका पोषण, कपड़े, सामान्य स्वास्थ्य, खिलौने और आम मिथक आदि जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस सामग्री को संबंधित क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों ने मूल्यांकन द्वारा प्रमाणित किया है। भविष्य में यह सामग्री एक मोबाइल ऐप के माध्यम से भारतीय माताओं को उपलब्ध करवाई जाएगी। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, बौद्धिक संपदा अधिकार इकाई के प्रभारी डॉ. विनोद कुमार व डॉ. पूनम मलिक उपस्थित रहे।